जातक कथा

(१) उलूकजातकम्

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश पाठ्य - पुस्तक ' संस्कृत दिग्दर्शिका ' के ' जातक कथा ' नामक पाठ के 'उलूकजातकम्' शीर्षक से अवतरित है ।

- अतीते प्रथमकल्पे जनाः एकमभिरूपं सौभाग्यप्राप्तं

  प्राचीन काल के प्रथम कल्प में लोगों ने एक सुन्दर सौभाग्यशाली

- सर्वाकारपरिपूर्णं पुरुषं राजानमकुर्वन् ।

  और समग्र आकृति से परिपूर्ण पुरुष को राजा बनाया ।

- चतुष्पदा अपि सन्निपत्य एकं सिंह राजानमकुर्वन् ।

  जानवरों ने भी एकत्रित होकर एक शेर को राजा बनाया ।

- तत : शकुनिगणा : हिमवत् - प्रदेशे एकस्मिन् पाषाणे सन्निपत्य

  उसके बाद पक्षीगण हिमालय प्रदेश में एक शिला पर एकत्रित होकर '

- ' मनुष्येषु राजा प्रज्ञायते तथा चतुष्पदेषु च ।

  मनुष्यों में राजा सुना जाता है और जानवरों में भी

- अस्माकं पुनरन्तरे राजा नास्ति ।

  लेकिन हमारे बीच में राजा नहीं है ।

- अराजको वासो नाम न वर्तते ।

  बिना राजा के रहना उचित नहीं है ।

- एको राजस्थाने स्थापयितव्यः ' इति उक्तवन्तः ।

  किसी एक को राजा के पद पर स्थापित करना चाहिए ' — ऐसा कहा ।

- अथ ते परस्परमवलोकयन्तः एकमुलूकं दृष्ट्वा ' अयं नो रोचते ' इत्यवोचन ।

तब उन्होंने एक दूसरे पर दृष्टि डालते हुए एक उल्लू को देखकर कहा — ' यह हमको अच्छा लगता है ।

- अथैकः शकुनिः सर्वेषां मध्यादाशयग्रहणार्थं त्रिकृत्व : अश्रावयत् ।

इसके बाद एक पक्षी ने सभी के बीच में राय जानने के लिए तीन बार घोषणा की ।

- ततः एकः काकः उत्थाय ' तिष्ठ तावत् '

तब एक कौआ उठकर बोला — जरा ठहरो

- अस्य एतस्मिन् राज्याभिषेककाले एवंरूपं मुखं ,

इसका इस राज्याभिषेक के समय ऐसा मुख है

- क्रुद्धस्य च कीदृशं भविष्यति !

तो क्रुद्ध होने पर कैसा होगा ?

- अनेन हि क्रुद्धेन अवलोकिता : वयं तप्तकटाहे

इसके क्रुद्ध होकर देखने पर तो हम लोग गर्म कड़ाही में

- प्रक्षिप्तास्तिला इव तत्र तत्रैव धडक्ष्यामः ।

डाले तिलों की भांति वहीं - वहीं पर भुन जायेंगे

- ईदृशो राजा मह्यं न रोचते इत्याह

ऐसा राजा मुझे अच्छा नहीं लगता । ऐसा बोला ।

- न मे रोचते भद्रं वः उलूकस्याभिषेचनम् ।

मुझे आपका उल्लू को राज्याभिषेक करना अच्छा नहीं लगता

- अक्रुद्धस्य मुखं पश्य कथं क्रुद्धो भविष्यति ।।

इसके अक्रुद्ध मुख को देखो , क्रुद्ध होने पर यह कैसा लगेगा ?

- स एवमुक्त्वा ' मह्यं न रोचते ' ' मह्यं न रोचते '

वह ऐसा कहकर ' मुझे अच्छा नहीं लगता , मुझे अच्छा नहीं लगता ' ,

- इति विरुवन् आकाशे उदपतत् ।

ऐसा चिल्लाता हुआ आकाश में उड़ गया।

- **उलूकोऽपि उत्थाय एनमन्वधावत्।**

  उल्लू भी उठकर उसके पीछे दौड़ा।

- **तत आरभ्य तौ अन्योन्यवैरिणौ जातौ।**

  तभी से लेकर वे एक दूसरे के बैरी हो गए।

- **शकुनयः अपि सुवर्णहंसं राजानं कृत्वा अगमन्।**

  पक्षीगण भी सुवर्णहंस को राजा बनाकर चले गए।

(२) नृत्यजातकम्

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश पाठ्य - पुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के जातक कथा पाठ के 'नृत्यजातकम्' नामक पाठ से संगृहीत है।

- **अतीते प्रथमकल्पे चतुष्पदा : सिंह राजानमकुर्वन्।**

  विगत प्रथम कल्प में चौपायों ने सिंह को राजा बनाया।

- **मत्स्या आनन्दमत्स्यं , शकुनयः सुवर्णहंसम्।**

  मछलियों ने आनन्द मछली को एवं पक्षियों ने सुवर्ण हंस को राजा बनाया।

- **तस्य पुन : सुवर्णराजहंसस्य दुहिता हंसपोतिका अतीव रूपवती आसीत्।**

  उस सुवर्ण राजहंस की पुत्री हंसपोतिका अत्यन्त सुन्दरी थी।

- **स तस्यै वरमदात् यत्**

  उसने उस हंसकुमारी को वर दिया

- **सा आत्मनश्चित्तरुचितं स्वामिनं वृणुयात् इति ।**

  कि वह अपने मनोनुकूल पति को चुन ले ।

- **हंसराज : तस्यै वरं दत्त्वा हिमवति शकुनिसभां संन्यपतत् ।**

  हंसराज ने उसे वर देकर हिमालय पर पक्षियों की सभा बुलायी ।

- **नानाप्रकारा : हंसमयूरादयः शकुनिगणा : समागत्य**

  नाना प्रकार के हंस मयूर आदि पक्षीगण आकर

- **एकस्मिन् महति पाषाणतले संन्यपतन् ।**

  एक विशाल शिला पर एकत्रित हुए ।

- **हंसराज : आत्मनः चित्तरुचितं स्वामिकम् आगत्य वृणुयात्**

  हंसराज ने ' अपने चित्त को रुंचने वाला पति आकर चुनलो

- **इति दुहितरमादिदेश ।**

  ' ऐसा पुत्री को आदेश दिया ।

- **सा शकुनसङ्घं अवलोकयन्ती**

  उसने पक्षी समूह को देखते हुए

- **मणिवर्णग्रीवं चित्रप्रेक्षणं मयूरं दृष्ट्वा**

  नीलमणि के रंग की गर्दन और रंग - बिरंगे पंखों वाले मयूर को देखकर

- **' अयं मे स्वामिको भवतु ' इत्यभाषत ।**

  यह मेरा स्वामी हो , ऐसा कहा |

- **मयूर : ' अद्यापि तावन्मे बलं न पश्यसि**

  मोर ने अभी ' मेरे बल को नहीं देखा है '

- **' इति अतिगर्वेण लज्जाञ्च त्यक्त्वा**

ऐसा कह अति गर्व से और लज्जा त्यागकर

- तावन्महत : शकुनिसङ्घस्य मध्ये पक्षौ प्रसार्य नर्तितुमारब्धवान्

  उस विशाल पक्षियों की सभा के बीच पंख फैलाकर नाचना आरम्भ कर दिया

- नृत्यन् चाप्रतिच्छन्नोऽभूत् ।

  और नाचते हुए नग्न हो गया ।

- सुवर्णराजहंस : लज्जित : ' अस्य नैव ह्रीः अस्ति

  स्वर्ण वर्ण राजहंस ने लज्जित होकर , ' इसे न लज्जा है

- न बर्हाणां समुत्थाने लज्जा ।

  न पंखों को उठाने में संकोच ,

- नास्मै गतत्रपाय स्वदुहितरं दास्यामि ' इत्यकथयत् ।

  इस लज्जा - हीन को अपनी पुत्री नहीं दूंगा ऐसा कहा ।

- हंसराजः तदैव परिषन्मध्ये आत्मनः भागिनेयाय '

  हंसराज ने उसी परिषद् के बीच अपने भांजे

- हंसपोतकाय दुहितरमदात् ।

  हंसकुमार को पुत्री दे दी ।

- मयूरो हंसपोतिकामप्राप्य लज्जित :

  मोर हंस - पुत्री को न पाकर लज्जित होकर

- तस्मात् स्थानात् पलायितः ।

  उस स्थान से भाग गया ।

- हंसराजोऽपि हृष्टमानस : स्वगृहम् अगच्छत् ।

  हंसराज भी प्रसन्न मन से अपने घर को चला गया ।